श्री
कुलजम सरूप

निजनाम श्री जी साहिबजी, अनादि अछरातीत ।
सो तो अब जाहेर भए, सब विध वतन सहीत ॥

प्रकास गुजराती जंबूर

जंबूर किताब पुरानी दाऊद अलैहस्सलाम पैगम्बर लाए थे। उसको रद्द कर उस नाम की यह प्रकाश गुजराती किताब हबसा में उतरी। इसका अनुवाद स्वयं अक्षरातीत श्री प्राणनाथजी महाराज ने अनूपशहर में हिन्दुस्तानी भाषा में किया, ताकि सब सुन्दरसाथ इसका भावार्थ समझ सकें।

रास खेलने के बाद श्री इन्द्रावतीजी ने प्रार्थना की कि हे मेरे धनी! आपने रास की रामतें तो अति सुखदाई खिलाई हैं, परन्तु इसमें आपके अन्तर्ध्यान होने पर जो दुःख हुआ, वह हमसे सहन नहीं होता है। अब वहां उस घर को ले चलो, जहां कभी भी आपसे हम जुदा न हो सकें। तब वालाजी ने उनकी प्रार्थना स्वीकार की। सब आत्माओं को निजधाम वापस ले गए।

कांई एणी पेरे कीधूं रास, रमीने जागिया।
कांई आपण आ अवतार, फरीने मांगिया।। १ ॥

रास का खेल करके जब मूल-मिलावा में जागृत हुए और फिर से हमने पूरा खेल देखने की मांग अपने पिया से की तो फिर से इस कालमाया के ब्रह्माण्ड में आए।

कांई तेणी घडी तत्काल, आपण आंही आवियां।
पेहेला फेराना लवलेस, आपण आंही ल्यावियां।। २ ॥

श्री राजजी महाराज ने हमारी मांग को तुरन्त स्वीकार किया। उस समय सब ब्रह्मसृष्टियां यहां उतरीं। पहली बार ब्रज में आए थे। उसमें जो चाहना बाकी रह गई थीं, उसको पूर्ण करने के लिए हम यहां आए।

वालेजीए तेणी ताल, सुन्दरबाई मोकल्यां।
सखी तमे लई चालो आवेस, म मूकूं एकला।। ३ ॥

वालाजी ने परमधाम से उसी समय श्यामाजी (सुन्दरबाई) को भेजा और कहा कि मैं आपको अकेला नहीं भेजूंगा। मेरा आवेश आपके साथ रहेगा।

नोट—श्यामाजी का नाम खेल में वालाजी ने सुन्दरबाई रखा। प्रमाण है चौपाई ७२ प्रगट वाणी। श्यामजी के मन्दिर में दर्शन देते समय कहा, 'धरयो नाम बाई सुन्दर निजवतन दिखाया घर'। दूसरा प्रमाण है प्रकाश हिन्दुस्तानी प्रकरण ४, चौपाई २। श्री सुन्दरबाई धनी धाम दुलहन इन्द्रावती पर दया पूर्ण। हृदय बैठ कहे वचन एह। कारण साथ किए सनेह॥

इंद्रावती लागे पाय, सुणो तमे साथ जी।
कांई आपणने अवसर, आव्यो छे हाथ जी।। ४ ॥

श्री इन्द्रावतीजी सब सुन्दरसाथजी के चरणों में प्रणाम करती हैं। हे सुन्दरसाथजी! यह सुन्दर मौका हमको फिर से मिला है।

॥ प्रकरण ॥ १ ॥ चौपाई ॥ ४ ॥

Nijanand App